

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



Founder's Essay

मनुष्य की कमजोरियों को जानना

ईसाई धर्म के संस्थापक यीशु के कुलीन शिष्यों का एक समूह था, जिसमें उनके धर्म के बारह प्रचारक थे। जब वे अधिकारियों द्वारा पकड़े गये, तो उन्होंने यीशु का साथ छोड़ दिया, यहाँ तक कि जोर देकर कहा कि वे उन्हें नहीं जानते थे। हालाँकि, शूली से जी उठने के बाद, और यीशु से मिलने के उपरांत उनमें समूल परिवर्तन आ गया। उनके विश्वासघात के बारे में अच्छी तरह से जानने के बावजूद उनकी निंदा करने से इनकार कर दिया। प्रचारकों ने अपने जीवन को बहुत जोखिम में डालकर भी ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार किया, और इस प्रकार सदियों तक यीशु की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार चलता रहा।

यीशु अच्छी तरह से समझ गए थे कि लोग कितने कमजोर होते हैं, और उन्होंने गर्मजोशी के साथ उनकी असफलताओं को स्वीकार किया। जब लोग किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जिनकी अपनी कमजोरियों और असफलताओं से अवगत है और फिर भी उन्हें स्वीकार

करते हैं, तब उनके जीवन में 180 डिग्री का बदलाव आ जाता है और उन्हें विश्वास हो जाता है कि उस व्यक्ति के प्रति स्वयं को समर्पित करने में किसी प्रकार का पछतावा नहीं होगा।

हम बौद्ध धर्म के पालन करनेवाले का विश्वास है कि बुद्ध हमारे सभी मानवीय व्यवहारों को गर्मजोशी के साथ स्वीकार करते हैं। बोधिसत्व अवलोकितेश्वर जिनमें बुद्ध का मन समाहित है, विश्व के पीड़ित प्राणियों की आवाज प्रति सचेत रहते हैं और उनके समक्ष तेंतीस रूपों में प्रकट होकर मुक्ति दिलाते हैं। जब हम उनकी करुणा से अभिभूत हो जाते हैं तो विश्व के विविध प्राणियों की आवाज के प्रति सचेत बनने की कोशिश करते हैं। और उन लोगों में जन्म मिलता है जो पुण्डरीक सूत्र की धर्मदेशना को "अपने जीवन की कीमत पर भी" आगे बढ़ाते हैं।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 146 - 147

Living the Lotus
Vol. 163 (April 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international

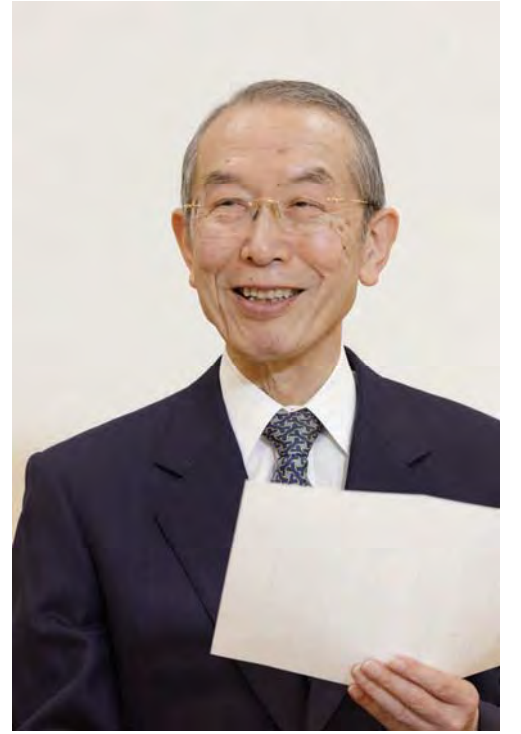
रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुसरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

जो लोग एक सुगंधित हवा की तरह हैं

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिशो कोसेइ काइ



अपने दिमाग के माध्यम से एक सुगंधित हवा

“हाना/ पुष्प” के गीतकार, रेन्तारो ताकी (1879-1903) ने जापान के खूबसूरत वसंत के दृश्यों का इस गीत में चित्रण किया है। “वसंत के एक सुहावने दिन,” का आरंभ एक गीत से होता है, जिसे आप में से कई लोग अच्छी तरह से जानते हैं। गीत में दिखाया गया चेरी फूल वसंत के एक फूल का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन चेरी के खिलने से पहले, बेर के फूल की मीठी सुगन्ध, डैफनी झाड़ियों और मैगनोलिया की मीठी सुगंध हवा को भर देती है और लोग वसंत के आगमन की खुशी का अनुभव करने लगते हैं।

ऐसी खुशी व्यक्त करने वाले शब्द पुण्डरीक सूत्र के परिचयात्मक अध्याय में भी पाए जाते हैं: “चंदन से निकली सुगंधित पवन एकत्रित लोगों के मन को प्रसन्न करती हैं।” संस्थापक निवानो ने इसके अर्थ को सरल भाषा में समझाया है कि “जब बुद्ध की सुगंधित हवा दिमाग में प्रवेश करती है, वह जीवित प्राणियों के मन में आनन्द उत्पन्न करती है।”

हममें से उन्हें जिसे बुद्ध धर्म का सामना हुआ है वे इसे सुनते हैं, इसका अध्ययन करते हैं, अभ्यास करते हैं और इनके प्रतिफल में उन्हें बहुत सारी उपलब्धियाँ और बोध होता है, फलस्वरूप लोगों के प्रति आभार अनुभव करते हैं। उन चीजों के लिए आभार महसूस करने में सक्षम हो जाते हैं जिन्हें हम नापसंद करते हैं, और हम इस बात से अवगत हो जाते हैं कि जिन चीजों ने हमें उस समय तक खुशी दी थी, वे वास्तव में स्वार्थ परक सोच से ज्यादा कुछ नहीं था। महसूस किया था, वे वास्तव में स्वार्थी सोच से ज्यादा कुछ नहीं थी। इस मोड़ पर पहुँचकर, हमारा जीवन एक बदलाव से गुजर रहा है।

एक बार जब हम अनुभव करने लगते हैं कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है, तो हम अनायास चिंता और पीड़ा से मुक्त होने की खुशी को आवाज देते हैं - हम धर्मदेशना के माध्यम से मुक्त हुए हैं। संस्थापक निवानो कहते हैं कि, “महा आनन्द उत्पन्न करना,” और इस समय अवस्था में वह व्यक्ति “दूसरों के मन में खुशी लाता है।” संयोग से, खुशी के लिए चीनी कैरेक्टर (ईत्सु) का अर्थ है मन से बीमार भावनाओं को दूर करना।

हम अपनी आँखों से बुद्ध को नहीं देख सकते। लेकिन, ग्रेट सेक्रेड हॉल में, जब हम किसी की धर्म यात्रा की बात सुनते हैं, जो बुद्ध की करुणा को महसूस कराता है और शिक्षण के अभ्यास के माध्यम से जीने की खुशी से अवगत कराता है, हम भी बुद्ध धर्म का सामना करने की खुशी का अनुभव करते हैं। शिक्षण की भव्यता हमारे मन के माध्यम से “चंदन की सुगंधित हवाओं” के रूप में उड़ती है। शाक्यमुनि के समय से लेकर आज तक, यह नहीं बदला है।





हम सभी सदाचारी लोग हैं

इचिगो (वर्तमान निगाता प्रान्त) के जेन भिक्षु रियोकान (1758-1831) को इस कविता के बारे में पता होगा, क्योंकि उन्होंने "मेरा सारा जीवन सुगंधित हो," इस कथन व्यक्तिगत आदर्श वाक्य बना लिया था। उन्होंने निश्चित रूप से - अपने जीवन को ऐसे व्यक्ति के रूप में तय किया, जो एक सुगंधित हवा की तरह रहा है, और जो लोगों के दिलों को गर्मजोशी के साथ ओतप्रोत रखा है, उन्हें शांत बनाता है, और उन्हें आनंदित करता है।

हालाँकि, धम्मपद हमें बताता है कि "गुणी लोगों की खुशबू हवा के विरुद्ध भी जाती है" और "गुणी लोग सुगंध के साथ हर दिशा को भरते हैं।" इसलिए, हम इस स्थिति को ले सकते हैं कि लोगों के दिलों में खुशी लाने के लिए गुणी होना आवश्यक है।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक सुसंस्कृत मन तथा कुशल कर्मों का संचय होना पुण्य का कारण है। हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि यह जरूरी है। इस समय, हम इस संसार में एक ऐसा जीवन जी रहे हैं, जो हमें प्रकृति और हमारे माता - पिता और पूर्वजों के गुणों के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ है। हममें से हर एक के पास पहले से ही प्रचुर गुण हैं। इसलिए, हमें केवल अपने स्वयं के पुण्य का अनुभव करने की आवश्यकता है। जिस किसी को भी अपने गुणों का बोध होता है और उनकी खेती करता है, वह सुगंधित हवा छोड़ सकता है और एक पुण्यात्मा हो सकता है।

ऐसा करने के लिए, कृतज्ञता का अनुभव करना महत्वपूर्ण है। लोग स्वाभाविक रूप से उन लोगों के प्रति झुकते हैं जो विनम्र और ईमानदार हैं और सदा अपने लिए कुछ किए के प्रति आभार प्रकट करने को तैयार रहते हैं। हंसमुख, दयालु, और गर्मजोशी से भरे कार्यों और शब्दों का उपयोग करने से व्यक्ति के गुणों में और अधिक सुगंध आती है। विचार - विमर्श के साथ और दूसरों के साथ तालमेल बैठाने से शिक्षा की सुगंधित हवा निकलती है जो लोगों को आसान साँस लेने देती है।

यह महीना शाक्यमुनि के जन्म की वर्षगाँठ और जापान में हेसेई युग के अंत दोनों का प्रतीक है। नया युग 1 मई से शुरू होगा। मैं अपने दिमाग को तरोताजा करने और अपने बोधिसत्व भाव को बनाए रखने के लिए सभी लोगों के बीच शांति को बढ़ावा देने का अभ्यास - एक दिनचर्या के रूप में बनाए रखते हैं। ऐसा करने के लिए, बुद्ध के शिक्षा की सुगंधित हवा को भेजने वाले तरीके देखना अधिक महत्वपूर्ण होगा।

कोसेइ से, अप्रैल 2019



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः

प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

अध्याय 7: मायावी शहर का दृष्टान्त (1)



पूर्ववर्ती अध्यायों में अक्सर दृष्टान्तों के माध्यम से बुद्ध और बुद्ध धर्म को दर्शाया गया है। इस अध्याय तथा अगले दो अध्यायों में बुद्ध और उनके शिष्यों के बीच के संबंध की व्याख्या की गई है। और यह अध्याय आगे उन लोगों की सहायता करेगा जो अभी तक शिक्षा को नहीं समझ सके हैं।

यहाँ, अध्याय 7 में, शाक्यमुनि ने कहा है कि उनके शिष्यों का उनके पूर्व जन्मों से गहरा संबंध है। यह उनके व्यवहार में प्रोत्साहित करता है और उन्हें भावी जीवन में बुद्धत्व की प्राप्ति का आश्वासन देता है। यहाँ बुद्ध की शिक्षा अर्थात् धर्मदेशना सनातन और अपरिवर्तनशील है, और सभी जीवित प्राणी बुद्ध - प्रकृति के अधिकारी हैं, इसलिए, अंततः सभी प्राणी बुद्धत्व प्राप्त कर सकते हैं।

बुद्ध की उत्पत्ति और इतिहास की सार्वभौमिकता एवं सर्वव्यापकता

अध्याय के प्रारंभ में ही, शाक्यमुनि एक समय से युगों पूर्व अतीत की बात करते हैं। अतीत में इतनी दूर कि जब तब एक महाभिज्ञानाभिभू नामक तथागत बुद्ध का नाम नहीं लिया जाया। पहले, वे एक राजकुमार थे और सोलह राजकुमारों के पिता थे, जिनमें से ज्येष्ठ पुत्र का नाम ज्ञानाकर था। जब बच्चे छोटे थे, तो वह एक दूर देश में भिक्षु बनने के लिए उन्हें छोड़ दिया था और दीर्घकाल के अभ्यास के उपरान्त सम्यक सम्बोधि ज्ञान प्राप्त किया। अभ्यास के अंतिम चरण में बुद्धत्व प्राप्त किया। जब ज्ञानाकर और उनके भाइयों को इस उपलब्धि का पता चला, तो उन्होंने अपने पिता के नक्शेकदम पर चलने का संकल्प लिया। उनकी माताएँ और काकियाँ उन्हें देखने के लिए आँसू बहा रही थीं, जबकि उनके दादा - राजा - और अमात्यों और प्रजागणों का एक समूह उनके साथ बुद्ध महाभिज्ञानाभिभू के निवास स्थान तक पहुँचे।

सूत्र में इस बिंदु पर, राजा ने बुद्ध महाभिज्ञानाभिभू की प्रशंसा करते हुए कहा, “यद्यपि आप एक साधारण व्यक्ति थे जो

हम सभी के साथ रहते थे, आपने जीवित प्राणियों को मुक्त कराने के लिए अनंत समय तक अभ्यास किया है, और यहाँ इस जगह में आप एक बुद्ध की तरह हैं। जब हम आप पर श्रद्धा करते हैं, तो यह हमें आशा देता है कि हम भी बुद्ध बन सकते हैं, और इससे हमें खुशी मिलती है जिसे हम सबने पहले कभी नहीं जाना है। हम आपको धर्मदेशना करने और मार्गदर्शन करने के लिए आग्रह करते हैं।” इस पर, सोलह राजकुमारों ने प्रशंसा की गाथा में शामिल होकर धर्म की शिक्षा की भीख माँगी।

बुद्ध महाभिज्ञानाभिभू ने सोलह राजकुमारों द्वारा अनंत असंख्य बुद्धों की पूजार्चना को याद करते हुए बोलना प्रारंभ किया, और उनके अधीन सद्धर्मपुण्डरीक की धर्मदेशना का पालन किया, सद्धर्मपुण्डरीक की धर्मदेशना का असंख्य लोगों को उपदेश किया, और अभ्यास में संलग्न किया। उन बुद्धों के निर्देशन में अनगिनत जीवों को चमत्कारिक पुण्डरीक सूत्र का उपदेश प्राप्त हुआ, और उन्हें इसका अभ्यास करने की प्रेरणा मिली। प्रत्येक असंख्य जीवित प्राणियों को जिन्हें बोधिसत्त्वों ने शिक्षा दी थी और रूपांतरित किया था, उन बोधिसत्त्वों के साथ बार बार पुनर्जन्म लेते रहें। कई जन्मों से बोधिसत्त्वों से धर्म को सुनते रहें, उन जीवित प्राणियों का उस पर पूर्ण विश्वास उत्पन्न हो गया और उसे समझने में भी समर्थ हो गए।





सहा लोक के शाक्यमुनि बुद्ध

महाभिज्ञानाभिभू बुद्ध के जीवन के बारे में कहानी समाप्त करने के बाद, शाक्यमुनि बुद्ध ने पुनः गंभीर स्वर में कहा, “हर कोई! जिनके संबंध मैं आपको बताने जा रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनिए — यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। सोलह बोधिसत्व जो महाभिज्ञानाभिभू बुद्ध के शिष्य थे, वे सभी बुद्ध बन गए, और अब भी वे पूरे ब्रह्मांड में धर्मदेशना का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।”

तब बुद्ध ने उन सभी बुद्धों के नाम और उनके क्षेत्र बताते हैं जहाँ वे धर्मदेशना का प्रचार प्रसार करते हैं। इन बुद्धों में सोलहवाँ कोई और नहीं, बल्कि स्वयं शाक्यमुनि बुद्ध हैं, जिन्होंने सहा लोक सम्यक सम्बोधि ज्ञान का साक्षात्कार किया और जहाँ वे लोगों को धर्मदेशना का प्रचार प्रसार किया और लोगों के जीवन को परिवर्तित कर दिया। यह बताता है कि जिन लोगों को उन्होंने अतीत में पुण्डरीक सूत्र का उपदेश किया था, वे सभी जो कोई और नहीं वही पुराने शिष्यगण हैं जो उनसे उपदेश सुन रहे हैं और भविष्य में भी उनके विश्वासी शिष्य रहेंगे — जो आज इसी सूत्र के द्वारा मुक्ति प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

उनका यह कहना जारी रहा है कि “हर कोई!” सुनो मैं (प्रभूत बुद्ध के रूप में या मानव के रूप में) हमेशा इस लोक में उपस्थित नहीं रहूँगा। एक बार जब बुद्ध अपनी धर्मदेशना का उपदेश का अन्त करते हैं तब वे शीघ्र ही परिनिर्वाण में प्रवेश कर जाते हैं। लेकिन यदि बहुत सारे लोगों को धर्म में अडिग विश्वास और पैठ है, मानव समानता की सच्चाई के बारे में जानते हैं, और मन में स्थिर हैं, तो वे उनके लिए सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र के धर्मोपदेश करते हैं, जैसाकि उन्होंने अतीत में किया था।”

उन्होंने कहना जारी रखा, “ऐसा कोई दो मार्ग नहीं है जिनके द्वारा कोई सम्यक सम्बोधि ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है; केवल एक ही मार्ग है, जो सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र के धर्मदेशना के उपदेश का है। हालाँकि, बुद्ध ने उपायकौशल्य का उपयोग किया है, यह कहना की, युक्तियुक्त तरीकों का उपयोग वे जीवित प्राणियों का नेतृत्व करने के लिए करते हैं जो कि अच्छी तरह से उनके विचारों और क्षमताओं को पहचानने और भेद करने के आधार सम्मत हैं। बुद्ध जानते हैं कि पाँचों इंद्रियों के सुखों की गहराई से जुड़े हुए प्राणी हैं और व्यक्तिगत रूप से अपने दुखों को स्वीकारते हैं। इन जीवित प्राणियों के लिए वह सर्वप्रथम निर्वाण का उपदेश

करते हैं, जिससे उनका भ्रम दूर हो और मन की शांति प्राप्त हो।”

इसके अलावा, उन्होंने एक दृष्टान्त के माध्यम से स्पष्ट किया है उसे मायावी शहर का दृष्टान्त कहते हैं, पुण्डरीक सूत्र में सात दृष्टान्तों में यह चौथा है। कहानी इस प्रकार है।

मायावी शहर का दृष्टान्त

एक अत्यंत भयानक और दूरदराज के क्षेत्र के एक निश्चित स्थान की सड़क बड़ी उँची नीची और खतरनाक है, जहाँ खतरनाक जंगली जानवर और अन्य खतरे अक्सर दिखाई देते हैं। इन खतरों के बावजूद, ऐसे लोगों का एक बड़ा समूह है जो कुछ दुर्लभ खजाने की तलाश में उस सड़क से जाना चाहते हैं। उनके बीच एक मार्गदर्शक है, तीक्ष्ण ज्ञान और अंतर्दृष्टि का व्यक्ति है, जो खतरनाक सड़क से इतना परिचित है कि वह आगे तक जानता है कि सड़क कहाँ से गुजर रही है और कहाँ अवरुद्ध है।

लेकिन पार्टी में ऐसे यात्री भी हैं जो थक चुके हैं और कुछ हिम्मत हार चुके हैं और अधीर होकर अपने मार्गदर्शक की ओर मुड़ते हैं और कहते हैं “हम पूरी तरह से थक चुके हैं और यह सड़क इतना भयावह है कि हम आगे जा नहीं सकते हैं। आगे की सड़क अभी भी लंबी है, और हम पीछे मुड़ना भी नहीं चाहते





हैमार्गदर्शक लोगों की परिस्थितियों के अनुसार आगे ले चलने के तरीकों से अच्छी तरह परिचित है, इसलिए वह स्वयं उन लोगों के लिए दुखी होता है कि अब वे वापस लौट भी नहीं सकते हैं और अपनी पहुँच के भीतर उतना अपूर्व खजाना छोड़ भी नहीं सकते हैं ?

इस विचार के साथ, वह अपनी उपायकौशल्य का प्रयोग कर मार्ग के आधे रास्ते से परे एक मायावी नगरी का निर्माण करता है और उन सबकी ओर मुड़कर कहता है, “सभी सुनें! अब पीछे लौटने का कोई कारण नहीं है, आप सब लौटना चाहते हो। आप सब आगे महा विशाल शहर में प्रवेश कर रुक सकते हैं आराम कर सकते हैं। क्या ऐसा करना चाहते हैं। यदि आप शहर में प्रवेश कर जाते हैं तो वहाँ अत्यंत शांति मिलेगी और आराम मिलेगा।”

थके हुए लोग सुनकर बहुत खुश हुए और मायावी शहर में प्रवेश कर आराम करते हैं। जब मार्गदर्शक देखता है कि पार्टी अपनी थकान से पूरी तरह से उबर चुका है, तो वह मायावी शहर को लुप्त कर देता है, और, उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहता है, “चलो, तुम सब चलो; खजाने का स्थान करीब है। यह विशाल शहर वास्तव में सिर्फ एक अस्थायी चीज थी, उपायकौशल्य का प्रयोग कर निर्मित किया गया था जिससे कि आप सब प्रफुल्लित अनुभव करें।”

इस प्रकार से पार्टी के यात्रियों को प्रोत्साहित करता है, और वह एक बार फिर से निश्चित करता है, उन्हें उस स्थान पर ले जाने में सफलता मिले जहाँ खजाना उनका इंतजार कर रहा है।

होक्के सानबू क्यो: काकू होन नो आरामाशी तो योतेन,
(कोसेइप्रकाशन 1991, [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 74 - 80)



जीवन जीने का तरीका जो लोगों को खुशी देता है

वसंत आ गया है - यही समय है जब चेरी के फूल पूरी तरह से खिल जाते हैं। जापान में, हम बौद्ध लोग अप्रैल माह में शाक्यमुनि के जन्मोत्सव मनाने के लिए हाना मात्सुरी (पुष्प उत्सव) रखते हैं, इस शुभ घटना के लिए हम सदा आभारी हैं।

इस महीने के लिए अपने संदेश में, प्रेसिडेंट निवानो ने एक ऐसा व्यक्ति बनने के महत्व की पुष्टि की है जिससे सुगंधित हवा निकलती है और लोगों के मन को सुकून देती है, जैसे सुगंधित चेरी फूल लोगों के लिए वसंत की खुशी लाते हैं।

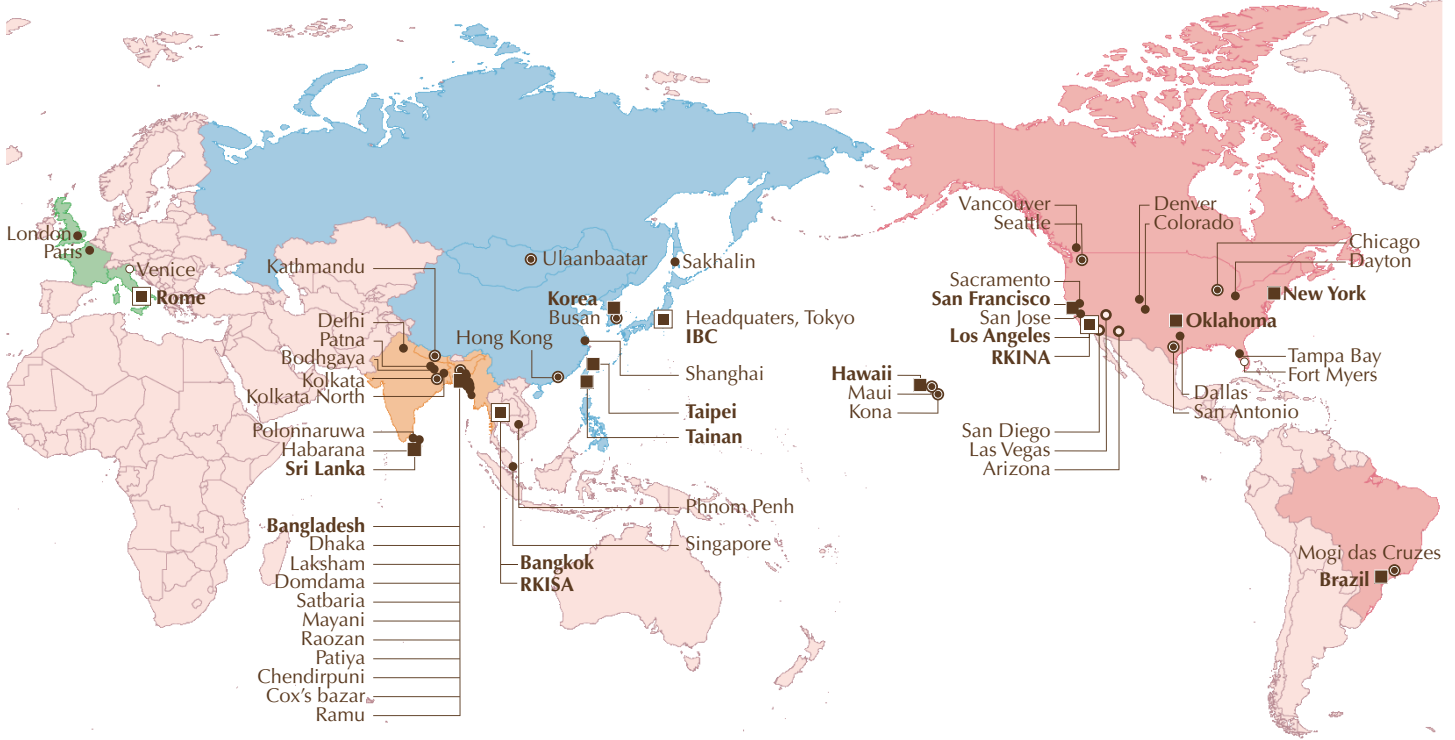
एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए, जिसके पास वैसे गुण हैं, हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम निष्कपट और विनम्र रहें तथा सदा कृतज्ञ रहना नहीं भूले।

यह वह समय है जब हमें जीवन का एक तरीका तलाशना चाहिए, जो लोगों के जीवन में सुगंध फैलाता है - जैसे कि लोगों के लिए बुद्ध की धर्मदेशना। आइए हम दूसरों के साथ विचार - विमर्श और सामंजस्यपूर्ण मन के साथ बातचीत करके, और अपने व्यवहार और बातों में हमेशा हसमुख, दयालु और गर्मजोशी का विकास करें।

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
 Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224
 e-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street, Suite #1, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
 Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
 e-mail: info@rkina.org <http://www.rkina.org>

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003 U.S.A.
 Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
 e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
<http://buddhistlearningcenter.org/>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
 P.O. Box 692148, San Antonio, TX 78269, U.S.A.
 Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
 e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
<http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
 Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com
<http://www.buddhismtampabay.org/>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
 Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
 e-mail: info@rkhawaii.org <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
 Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740 U.S.A.
 Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
 Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
 e-mail: rk-la@sbcglobal.net <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
 Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437
 e-mail: info@rksf.org <http://www.rksf.org>

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
 Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499
 e-mail: rkny39@gmail.com <http://rk-ny.org/>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
 Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com
<http://rkchi.org/>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

<http://www.rkftmyersbuddhism.org/>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
 Tel: 1-405-943-5030 Fax: 1-405-943-5303
 e-mail: rkokdc@gmail.com <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
 Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
<http://www.rkina-dayton.com/>

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
 CEP 04116-060 Brasil
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377 Fax: 55-11-5549-4304
 e-mail: rissho@terra.com.br <http://www.rkk.org.br>

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
 CEP 08730-000 Brasil
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongjheng District,
Taipei City 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433
<http://kosei-kai.blogspot.com/>

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420,
Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

International Buddhist Congregation (IBC)

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibrk-rk.org/>

Branches under the Headquarters**Rissho Kosei-kai of Hong Kong**

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**Rissho Kosei-kai of South Asia Division**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division**Rissho Kosei-kai of Delhi**

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur, Kathmandu,
Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna**Rissho Kosei-kai of Singapore****Thai Rissho Friendship Foundation**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel & Fax: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station:
Mirshari, District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu**Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 Fax: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**Branches under the Headquarters****Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax: 39-06-48913949 e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK**Rissho Kosei-kai of Venezia****Rissho Kosei-kai of Paris**